संघ माला के साथ द्विमासिक चातुर्मास आराधना संपन्न

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की पावन प्रेरणा से श्री सिद्धाचल महातीर्थ की पावन भूमि पर धोरीमन्ना निवासी **श्री बाबुलालजी भूरचंदजी लूणिया** परिवार एवं **श्री रायचंदजी प्रेमराजजी दायमा** परिवार कोठाला निवासी की ओर से द्विमासिक चातुर्मास का आयोजन किया गया।

इस भव्यातिभव्य चातुर्मास को निश्रा प्रदान की पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरूष आचार्य देव श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव **उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 8** एवं पूजनीया खान्देश शिरोमणि साध्वी श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा 7, पूजनीया संघ रत्ना साध्वी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ठाणा 20, पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. ठाणा 3, पूजनीया साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. ठाणा 2 एवं पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. ठाणा 4 आदि विशाल साधु साध्वी मंडल ने।

प्रतिदिन तलेटी की यात्रा का वरघोडा, प्रतिदिन पूज्यश्री के तात्विक प्रवचन, प्रतिदिन पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा तत्वज्ञान शिविर, प्रतिदिन दोपहर में पूजनीया बहिन म. के प्रवचन, प्रतिदिन साधु साध्वियों द्वारा परमात्म भक्ति के रस में भिगो देने वाली भक्ति संध्या! इन कार्यक्रमों ने आराधकों का जैसे जीवन ही बदल दिया।

श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज द्वारा रचित ऋषभदेव स्तवन एवं अजितनाथ स्तवन के विवेचन में ही 40 दिनों का लम्बा समय पूरा हो गया। हर शनिवार को होता प्रश्नोत्तरी प्रवचन और हर रविवार को होता पारिवारिक प्रवचन!

इस बीच ओसवाल स्थापना दिवस, रक्षाबंधन पर्व, पन्द्रह अगस्त एवं भगवान् श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर विशेष प्रवचनों का आयोजन हुआ।

पूज्यश्री के अतिसरल और अतिगहन, तात्विक और सात्विक प्रवचनों को श्रवण करने के लिये अन्य धर्मशालाओं में चातुर्मास कर रहे आराधक बडी संख्या में पधारते थे। 12 हजार वर्गफीट का विशाल पाण्डाल खचाखच भरा रहता था।

इसी कड़ी में ता. अगस्त को चारित्र उपकरण वंदनावली का आयोजन किया गया। इस वंदनावली कार्यक्रम का संयोजन सुप्रसिद्ध संगीतकार श्री नरेन्द्र वाणीगोता द्वारा किया गया। उपकरणों को घर ले जाने के चढावे सामायिक, माला आदि धर्म-विधानों द्वारा बोले गये।

इस बीच यहाँ साधु साध्वियों, श्रावक श्राविकाओं में हुए मासक्षमण, सिद्धितप, शत्रुंजय तप आदि विविध तपश्चर्याओं के उपलक्ष्य में पंचाह्निका महोत्सव का विशिष्ट आयोजन किया गया। पूजनीया साध्वी श्री विभांजनाश्रीजी म. सा. ने मासक्षमण मृत्युंजय तप की महान् तपस्या की। साथ ही पूना कोसेलाव निवासी सौ. मंजूदेवी ललवानी, सौ. आशादेवी तातेड ने मासक्षमण की तपस्या की। इस आयोजन में प्रथम तीन दिनों में खरतरगच्छाचार्य श्री वर्धमानसूरि रचित श्री अर्हन् महापूजन का विधान किया गया। इस विधान के तीसरे दिन परमात्मा की स्वर्णपूजा के अन्तर्गत सैंकडों महिलाओं ने अपनी अंगूठियां उतार कर परमात्मा को समर्पित कर दी।

चौथे दिन श्री सिद्धचक्र महापूजन पढाया गया। जिसे स्वनामधन्य विशिष्ट साधक श्री बाबुभाई कडी वालों के पौत्र सुश्रावक परम साधक श्री विमलभाई शाह ने पढाया। विशिष्ट शास्त्रीय रागों में इस महापूजन का श्रवण कर भक्तगण झूमने लगे। पांचवें दिन दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

ता. 29 अगस्त को पूज्यश्री के केश दाढी मूंछ का लुंचन हजारों लोगों ने भीगती आंखों से देखा।

ता. 30 अगस्त को श्रीमती पुष्पादेवी के मासक्षमण के उपलक्ष्य में श्री शांतिलालजी डामरचंदजी चतुर्भुजजी छाजेड परिवार की ओर से त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया। इसके अन्तर्गत प्रथम दिन दादा गुरुदेव का महापूजन पढाया गया। दूसरे दिन श्रावक प्रवर श्री विमलभाई शाह द्वारा श्री अर्हन् अभिषेक वर्ध्ामान शक्रस्तव महापूजन का अनूठा आयोजन किया गया। इस विशुद्ध अनुष्ठान में केवल परमात्मा की ही भक्ति है। इस महापूजन में किसी भी प्रकार के देवी देवताओं का पूजन या स्मरण विधान नहीं है।

तीसरे दिन मुमुक्षु कुमारी सीमा छाजेड के दीक्षा मुहूर्त्त की उद्घोषणा के उपलक्ष्य में जिन शासन महान् कार्यक्रम की प्रस्तुति चेन्नई से पधारे श्रावक प्रवर श्री मोहनजी मनोजजी गोलेच्छा द्वारा दी गई।

ता. 2 से 9 नवम्बर तक पर्युषण महापर्व की आराधना अत्यन्त आनंद मंगल व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। पर्युषण की आराधना करने के लिये बाहर से लगभग एक हजार से अिधक आराधकों का आगमन हुआ। बाडमेर, चेन्नई, बैंगलोर, डुठारिया, पूना, धोरीमन्ना, अहमदाबाद, जोधपुर, जयपुर, दिल्ली, छत्तीसगढ, पंजाब आदि पूरे भारत के क्षेत्रों से आराधकों का आगमन हुआ। आराधकों का अनुभव रहा कि ऐसे पर्युषण हमने अपने जीवन में पहली बार किये हैं।

पर्वाधिराज की आराधना के मध्य चातुर्मास आराधकों का आयोजक परिवार द्वारा सोने के सिक्के द्वारा भावभीना बहुमान किया गया। उनका दूध से पादप्रक्षाल किया गया। तिलक, माला और श्रीफल अर्पण किया गया।

दूसरे दिन सिद्धि तप, मासक्षमण, 21 उपवास, 15 उपवास, 11 उपवास, 9 उपवास एवं अट्ठाईयों के तपस्वियों का अभिनंदन किया गया।

पूज्यश्री के लम्बे समय तक चलने वाले प्रवचनों में भी खचाखच भरा हुआ पाण्डाल! कीर्तिमान बनी सपनों की बोलियाँ! पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा बारसा सूत्र का वांचन! अर्थ सहित समझ पूर्वक हुआ संवत्सरी का महाप्रतिक्रमण! सिद्धि तप के तपस्वी पूजनीया साध्वी श्री शुक्लप्रज्ञाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री निष्ठांजनाश्रीजी म. पूजनीया साध्वी श्री सत्वबोधिश्रीजी म. की गुरूवर्याओं द्वारा कामली ओढाकर तप अनुमोदना! आयोजक लूणिया परिवार की कुलवधू सौ. श्रीमती झमूदेवी भैरूचंदजी लूणिया के मासक्षमण का अभिनंदन!

इस चातुर्मास का अनूठा यादगार दिन आया 10 सितम्बर का दिन! पारणे का दिन! तलेटी की यात्रा कर आये थे। सीध्ो पाण्डाल में ही कार्यक्रम था। संवत्सरी के दिन 9 सितम्बर को यह घोषणा की गई थी कि कल एक विशिष्ट उद्घोषणा होगी। इस कारण सभी उत्सुक थे। पूरा पाण्डाल भरा था। पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ने जनता की उत्सुकता खत्म करते हुए चार दीक्षाओं की घोषणा की।

अपनी विनंती को सौ. उषादेवी व पुत्र भरत व आकाश ने गीतिका के द्वारा प्रस्तुत किया। मुमुक्षु भरत ने सिंह गर्जना की भांति संसार की असारता, मां अंबिकादेवी के अनुग्रह, गुरुजनों व परिजनों के उपकार की महिमा गाते हुए दीक्षा हेतु मुहूर्त्त प्रदान करने की पूज्यश्री से भावभीनी विनंती की। भरतकुमार बोथरा के इस वक्तव्य को सुनकर लोगों ने अत्यन्त अचरज का अनुभव किया। उसकी आवाज, बोलने की शैली, चेहरे के हावभाव सब कुछ उसके उज्ज्वल भविष्य की रूपरेखा स्पष्ट कर रहे थे।

सिद्धि तप के तपस्वी मुमुक्षु गौतमकुमारजी बोथरा ने अपने भावों को व्यक्त करते हुए अपने अनुभव सुनाये। पूज्यश्री ने ज्योंहि मिगसर वदि 3 ता. 20 नवम्बर 2013 का शुभ मुहूर्त्त घोषित किया, त्योंहि बोथरा परिवार नृत्य कर उठा। लोगों ने भावाश्रुओं से बधाया। खरतरगच्छ में एक अभिनव इतिहास का सर्जन होने जा रहा है। जब एक ही परिवार की चार दीक्षाऐं एक साथ संपन्न होगी।

ता. 11 सितम्बर को आयोजक परिवार का संघपति माला विधान हुआ। विधि विधान के साथ मोक्ष माला का परिधान होने के बाद आराधक संघ की ओर से रजत पत्र द्वारा अभिनंदन किया गया।

आराधक संघ की ओर से तिलक करने का लाभ संघमाता इचरजदेवी चंपालालजी डोसी संघवी विजयराजजी डोसी परिवार खजवाणा निवासी ने लिया। जबकि माला से बहुमान का लाभ संघवी अशोककुमारजी मानमलजी भंसाली परिवार ने, श्रीफल से बहुमान का लाभ संघवी लाधमलजी मावाजी मरडिया, चितलवाना वालों ने, साफा व चुन्दडी से बहुमान का लाभ श्री बाबुलालजी राणामलजी लालन मांगता वाले धोरीमन्ना वालों ने, रजत मय अभिनंदन पत्र से बहुमान का लाभ श्री भीखचंदजी धनराजजी देसाई सिणधरी वालों ने तथा रजतमय शत्रुंजय पट्ट अर्पण करने का लाभ डाकोर निवासी श्री रामलालजी राणामलजी मालू परिवार ने लिया।

फिर श्री जिन हरि विहार ट्रस्ट, अहमदाबाद खरतरगच्छ ट्रस्ट, श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी, श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट जहाज मंदिर मांडवला, श्री जिनकुशलसूरि सेवाश्रम संस्थान कुशल वाटिका बाडमेर, जैन श्री संघ पिपलोन, श्री मुनिसुव्रतस्वामी कुशल वाटिका शाहीबाग अहमदाबाद, श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट बसवनगुडी बैंगलोर, बाडमेर सेवा समाज अहमदाबाद, श्री मन्नुकुमारजी भंसाली चेन्नई आदि विभिन्न संस्थाओं द्वारा अभिनंदन किया गया।

अभिनंदन समारोह से पूर्व चातुर्मास प्रेरिका पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. ने कहा- यह चातुर्मास अपने आप में अनूठा एवं ऐतिहासिक रहा है। श्री बाबुलालजी लूणिया एवं श्री रायचंदजी दायमा परिवार ने परम उदारता के साथ लाभ प्राप्त किया है। उनकी पुण्याई देखो कि इस चातुर्मास में पांच पांच दीक्षाओं के मुहूर्त्त प्रदान किये गये। इस परिवार की जितनी अनुमोदना की जाय, उतनी कम है। हमारे संघ को इस बात का गौरव है कि हमें ऐसे सुश्रावक मिले हैं।

महामंगलकारी उपधान तप का प्रारंभ

पूज्य गुरुदेव उपाध्याय श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. आदि विशाल साधु साध्वी मंडल की पावन निश्रा में पूजनीया बहिन म. डॉ. विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की सत्प्रेरणा से चातुर्मास लाभार्थी श्री बाबुलालजी लूणिया एवं श्री रायचंदजी दायमा परिवार की ओर से महामंगलकारी उपधान तप का प्रारंभ भाद्रपद सुदि 14 ता. 18 सितम्बर 2013 को हुआ। जिसमें लगभग 150 से अिधक आराधक उपधान तप की आराधना कर रहे हैं।

प्रेषक - जहाज मंदिर कार्यालय